* S B - 0 2 1 8 / 2 0 0 0 *

SB-0218

Third Year B.A. Examination

March / April – 2011

Hindi : Paper-I

Time : **3** Hours] [Total Marks : **70**

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **T.Y.B.A.**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 1**

☛ Subject Code No. : **0 2 1 8** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **Nil**

Seat No. :

Student's Signature

(२) सभी प्रश्नो के अंक समान है।

१ ''कबीर सच्चे अर्थों में मानवीय एकता के समर्थक कवि है ।'' सिद्ध कीजिए । १४

अथवा

१ ''जायसी ने प्रेम की पीर का विशद एवं मार्मिक निरूपण किया है ।'' चर्चा कीजिए। १४

२ सूर के पदों के आधार पर कृष्ण की बाललीला का निरूपण कीजिए । १४

अथवा

२ तुलसी पदों के आधार पर रामचन्द्रजी की महिमा का निरूपण कीजिए । १४

३ मीरां की वेदनानुभूति का निरूपण अपने शब्दों में कीजिए । १४

अथवा

३ बिहारी की बहुज्ञता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । १४

४ टिप्पणियाँ लिखिए : १४

(अ) जायसी की भाषा–शैली ।

अथवा

(अ) बिहारी के नीतिपरक दोहे ।

(ब) मीरां की नारीभावना ।

अथवा

(ब) तुलसी की भाषा ।

५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १४

(अ) माया मुई न मन मुवा, मरि मरि गया सरीर ।
आसा त्रिस्नाँ नाँ मुई, यौं कहि गया कबीर ॥
कबीर माया मोहनी, जैसी मीठी खाँड ।
सतगुर की कृपा भई, नहीं तौ करती भाँड ॥

अथवा

(अ) मेरे बेड़ो लगाज्यो पार, प्रभु जी मैं अरज करूँ छू ।
या भव में मैं बहु दुख पायो, संसा सोग निवार ।
अष्ट करम की तलब लगी है दूर करो दुख भार ।
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी री धार ।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर आवागमन निवार ।

(ब) तजि तीरथ, हरि–राधिका–तन–दुति करि अनुरागु ।
जिहिं ब्रज–केलि–निकुंज–मग, पग पग हो तु प्रयागु ॥
जपमाला, छापैं तिलक, सरै न एको कामु ।
मन–काँचे नाचै वृथा, साँचै राँचै रामु ॥

अथवा

(ब) उर में माखनचोर गड़े ।
अब कैसेहु निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े ॥
जदपि अहीर जसोदानन्दन तदपि न जात छँड़े ।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े ॥
को बसुदेव, देवकी है को, ना जाने औ बूझै ।
सूर स्याम सुंदर बिन देखे और न कोऊ सूझै ॥